IJAER/ March-April 2023/Volume-12/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन'

डॉ0 सतेन्द्र कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
डी0ए0वी0 पी0जी0 कॉलिज, मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)

शोध–सारः आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक मानवतावादी दृष्टिकोण को धारण करने वाला है। इस सदी में शिक्षक पुनर्संरचनावाद, पंथनिरपेक्षता एवं लोकतान्त्रिक समाजवाद को स्वीकार कर रहा है। शिक्षक आज बालक का शिक्षणकर्ता कम और मार्गदर्शक अधिक है। 'इवान इलिच' ने डीस्कूलिंग अर्थात निर्विद्यालयीकरण का सुझाव दिया। इन्होंने विद्यालय को मृत प्रायः माना है और यह संकल्पना देकर विद्यालय के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिह्न लगा दिया। इवान इलिच ने स्वीकार किया कि शिक्षा व्यवस्था का प्रारूप अनौपचारिक व ननौपचारिक होना चाहिए जिसमें बालक जब चाहे, जैसे चाहे सीखे यह उसका अधिकार है और इस अवसर को उसे मिलना ही चाहिए। यही कारण है कि वर्तमान में औपचारिक शिक्षा के स्थान पर खुली शिक्षा के रूप को भी समर्थन मिल रहा है। शिक्षक अब विद्यालय से दूर रहकर भी विद्यार्थियों को शिक्षा देने लगे हैं। प्रारम्भ से लेकर वर्तमान तक शिक्षण व्यवसाय निः संदेह एक आदर्श व्यवसाय रहा है और यही कारण है कि शिक्षक के उत्तरदायित्व, उसकी जवाबदेह पूर्ण भूमिकाएं तथा उसके कार्य अधिक आदर्श है। आधुनिक वैश्विक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक के स्वरूप की संकल्पना पर ध्यान दे तो दृष्टिगत् होता है कि शिक्षक वर्तमान परम्परागत शिक्षण व्यवस्थायों व कार्य प्रणाली के साथ परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को तैयार कर रहा है। आज शिक्षक अपने शिक्षण में नवीन, सामयिक प्रविधियों, नवीन प्रौद्योगिकी व यांत्रिकी उपकरणों को प्रयोग मे लाता है। प्रवेश प्रक्रिया, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, मूल्यांकन प्रक्रिया, अभ्यास प्रक्रिया आदि में नवीन कठोर व मृदु तकनीकी उपागमों का प्रयोग भी आज शिक्षक करने लगा है।

प्रस्तावनाः वर्तमान शिक्षक भूतकाल के शिक्षकों से भिन्न दिखाई देते है, जिसमें शिक्षक बालकों का मित्र तथा सहयोगी होने के कारण मार्गदर्शक के रूप में भूमिका का निर्वाह करता है। शिक्षक विद्यार्थियों की विचार शक्ति को उत्प्रेरित करते हुए उन्हें अनेक प्रकार के मार्गों को दिखलाता है और सही चयन में सहायता करता है। वर्तमान में शिक्षक शिक्षण–अधिगम के साथ–साथ अपने विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता के मूल्यों का विकास करने में भी भूमिका निभाता है। प्राचीन काल से आज तक शिक्षक को समाज के

आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकारा जाता है। आदिकाल में वह ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश और कालान्तर में धर्मगुरु एवं वर्तमान में मार्गदर्शक बन गया इसलिए यह तो निश्चित ही स्पष्ट है कि व्यक्तित्व निर्माण में गुरू की अद्वितीय भूमिका रही है। मनोविज्ञान के सकारात्मक प्रभाव ने शिक्षा के केन्द्र में बालक को खड़ा कर दिया है। अतःएव आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक शिक्षण–अधिगम कर्ता होने के साथ–साथ अभिभावक, निर्देशक, सलाहकार, निष्पक्ष निर्णायक सहयोगी, आदि अनेक भूमिकाओं का निर्वाह करता है। शिक्षक विद्यार्थियों का नेतृत्व करता हैं और उनको सही दिशा–निर्देश प्रदान करता है। समाज और समय की आवश्यकतानुसार विद्यालय में अनेक क्रियाओं को आयोजित करने के कार्य भी शिक्षक करता है। शिक्षक छात्रों की योग्यताओं व क्षमताओं का पता लगाकर उनकी रुचियों–अभिरुचियों को जानकर, उनके व्यक्तित्व को पहचानकर, उनके गुण–अवगुणों को ज्ञात कर उसी आधार पर अध्ययन योग्यताओं का आकलन कर सही दिशा में आगे बढ़ने का निर्देश देता है।

शिक्षक समाज का एक आदर्श सदस्य है जो जाति, धर्म, लिंग आदि किसी भी भेदभाव रहित होकर बालक के व्यक्तित्व को निखारता हैं। समाज के मानकों के अनुरूप व्यक्तित्व का निर्माण करना ही शिक्षक का उत्तरदायित्व है। शिक्षक का अधिक महत्त्वपूर्ण काम छात्रों के सामाजिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर ध्यान देना है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की बहुतेरी भूमिकाएँ हैं, जिनका अध्ययन आवश्यक है:

- विषय विशेषज्ञ
- व्यावसायिक मार्गदर्शक
- शिक्षक एक सामाजिक आदर्श
- अन्य परिप्रेक्ष्य

विषय विशेषज्ञः वर्तमान वैश्विक शिक्षा व्यवस्था में मात्र विषय–वस्तु का साधारण ज्ञान पर्याप्त नहीं है वरन् उसमें निपुणता आवश्यक है। शिक्षक को स्व–विषय में निहित सभी कौशलों का ज्ञाता होना चाहिए जिससे वह उस ज्ञान कौशल को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में सक्षम हो। सम्प्रेषण कला में शिक्षक को विशेष रूप से दक्ष होना चाहिए, जिसमें उसकी आधारिक योग्यता, कार्य क्षमता, शिक्षण–अधिगम कला, विधि–प्रविधियों का ज्ञान, सहायक कौशलों का ज्ञान होना आवश्यक है। बाल मनोविज्ञान की विशेषताओं से परिपूर्ण विद्यार्थियों की प्रकृति, विषय प्रकृति, समाज की आवश्यकाताओं और वर्तमान व भविष्य की

आवश्यकताओं को समझने वाला ही शिक्षक बनने की सामर्थ्य रखता है। वर्तमान शिक्षक अनुकूल शैक्षिक वातावरण व प्रौद्योगिकी उपकरणों के प्रयोग द्वारा ज्ञान का विकास करने की विशेषज्ञता रखता है।

व्यावसायिक मार्गदर्शकः वर्तमान शिक्ष व्यवस्था में शिक्षण–अधिगम अन्य व्यवसायों की भाँति न होकर उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवसाय है। आधुनिक वैश्विक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक का प्रमुख उत्तरदायित्व अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को बालकों के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार प्रयोग करता है, इस भूमिका में निहित हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक विषय वस्तु का शिक्षण करें अपितु अपने विद्यार्थियों को पर्याप्त चयन करने की स्वतंत्रता भी दे। ये सभी कार्य अनुशासन पालन करवाने की जवाबदेहिता के साथ होने चाहिए। शिक्षक की व्यावसायिक संहिता यह भी कहती है कि शिक्षक को स्वयं को आदर्श स्थिति तक अनुशासित होना चाहिए। विद्यालय में सौंपे गये सभी उत्तरदायित्वों को निर्धारित समय में पूर्ण करना शिक्षक की पूर्ण व्यावसायिकता को प्रदर्शित करता है।

शिक्षक एक सामाजिक आदर्शः किसी भी समाज में शिक्षक एक सामाजिक आदर्श के रूप में होता है यह अवधारणा आदिकाल से भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सन्निहित है। शिक्षक विभिन्न माध्यमों से संकलित की गयी नूतन सूचनाएं विद्याथियों से प्रत्यक्ष रूप में साझा करता है। वह न्यायाधिकारी के रूप में विद्यार्थियों के मध्य उत्पन्न होने वाले विवादों को सहजता के साथ सुलझाता है इसलिए यहाँ वह निर्णय करने में वह एक न्यायाधीश की भूमिका का निर्वाह करता है। मूल्यांकन करते समय वह एक निष्पक्ष मूल्यांकनकर्ता की भूमिका का निर्वाह करता हैं। अभिभावक के रूप में शिक्षक बालकों के लिए सत्य–असत्य को परख कर निर्णय लेता है। वर्तमान में विद्यार्थी अकारण तनावग्रस्त रहते है, इसलिए उनको समझना और समस्याओं का समाधान करना शिक्षक की सामाजिक आदर्श की भूमिका के अतर्गत आता है।

अन्य परिप्रेक्ष्यः आधुनिक वैश्विक शैक्षिक व्यवस्था में अन्य परिप्रेक्ष्य में भी शिक्षक की बहुतेरी भूमिकाएँ हैः

- निर्बल व असहाय वर्ग को आगे बढ़ाना।
- सामाजिक न्यायकर्ता की भूमिका का निर्वाह करना।
- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक मूल्यों का विकास कर छात्रों को बेहतर नागरिक बनने में भूमिका का निर्वाह करना।

- सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, समाजवादी, लोकतन्त्रात्मक अवधारणाओं को स्थापित करने की भूमिका।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने की भूमिका का निर्वाह करना।
- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय भावना को विकसित करने में भूमिका।
- छात्रों में धर्म, संस्कृति, जाति, आदि किसी भी आधार पर भेदभाव की भावना उत्पन्न ना हो इसका उत्तरदायित्व विशेष रूप से शिक्षक का है।

अतः आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को स्वयं समाज में विनिर्मित नवीन समस्याओं व परिस्थितियों का अध्ययन विशेष रूप से करना चाहिए, जिससे वह समाज के प्रति अपनी भूमिका स्वयं निर्धारण कर सके। शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह छात्रों को उनके कर्तव्यों के प्रति सचेष्ट करना सिखाये साथ ही साथ छात्रों को उन उत्तरदायित्वों को वहन करके में सक्षम बनाये, जो भविष्य में उनके समक्ष उपस्थित होने वाले है। निष्कर्षः आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक अभिभावक, पथ–प्रदर्शक, निर्देशक, सहायक और सामाजिक आदर्श की प्रतिमूर्ति होता है। वह बालक की अभिवृत्तियों व अभिरुचियों के अनुसार शिक्षण–अधिगम सामग्री का संकलन और प्रस्तुतीकरण प्रभावी रूप में करता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक स्वयं के शिक्षण में नवीन विधियों–प्रविधियों व नवीन प्रौद्योगिकी का प्रयोग करता है। वह बालकों में जाति, धर्म, संस्कृति व स्थान आदि किसी भी भेदभाव को सहन नहीं करता और सबके साथ समान व्यवहार कर आदर्श परिस्थितियों को निर्मित करता है। उसके हृदय में सभी जाति–धर्मों, सभी भाषा–साहित्यों और सभी समाज–संस्कृतियों के प्रति उदार भाव रहता है। यही कारण है जिससे शिक्षक के द्वारा बालकों में मूल्यों का विकास कर राष्ट्रीय एकता का विकास सम्भव है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- सक्सेना, राधा रानी (2002); ''उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक'', जयपुर : क्लासिक पब्लिकेशन्स।
- गुप्ता, मंजु (2007); ''आधुनिक शिक्षण प्रतिरूप'', नई दिल्ली : के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स
- पाठक, आर. पी. (2010); ''आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्याएं एवं समाधान'', नई दिल्ली : कनिष्क पब्लिशर्स
- सिंह, राजेन्द्रपाल (2011); ''तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्त'', जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- सिंह, सुरेश (2012); ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'', इलाहाबाद : अनुभव पब्लिसिंग हाउस।
- सक्सैना, एन. आर. स्वरूप (2012); ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा'', मेरठ : आर.लाल. बुक डिपो।
- यादव, वीरेन्द्र सिंह (2013); ''भारतीय शिक्षा का बदलता परिदृश्य : चुनौतियाँ एवं समाधान की दिशाएँ'', नई दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन्स।